* وَإِذِ ٱسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِۦ فَقُلْنَا ٱضْرِب بِّعَصَاكَ
ٱلْحَجَرَ ۖ فَٱنفَجَرَتْ مِنْهُ ٱثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ
مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ مِن رِّزْقِ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يَٰمُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَٰحِدٍ
فَٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنۢبِتُ ٱلْأَرْضُ مِنۢ بَقْلِهَا
وَقِثَّآئِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ ٱلَّذِى
هُوَ أَدْنَىٰ بِٱلَّذِى هُوَ خَيْرٌ ۚ ٱهْبِطُوا۟ مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا
سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ ٱلذِّلَّةُ وَٱلْمَسْكَنَةُ وَبَآءُو بِغَضَبٍ
مِّنَ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا۟ يَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
ٱلنَّبِيِّـۧنَ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا۟ وَّكَانُوا۟ يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

Theme	
The miracle of providing water from a rock. Israelites rejected the heavenly food. Israelites disobedience and transgression.	चट्टान से पानी निकालने का मोज़िज़ा। बनी इसराईल का आसमानी खाने को ठुकराना। बनी इसराईल की नाफ़रमानी और सरकशी।
Tarjumani	
Remember, when Musa (Moses) prayed for water for his people; We said: "Strike the rock with your staff." Thereupon, twelve springs came out of it. Each tribe was	याद करो, जब मूसा ने अपनी कौम के लिए पानी की दुआ की तो हमने कहा कि फलां चट्टान पर अपना असा मारो	चुनांचे उससे बारह चश्मे फुट निकले और हर कबीले ने जान लिया कि कौन-सी जगह उसके पानी लेने

assigned its own drinking-place. Then they were commanded: "Eat and drink of what Allah has provided and do not create mischief in the land." Remember, when you said: "O Musa (Moses)! We cannot endure one kind of food; call on your Rabb to give us a variety of food which the earth produces, such as green-herbs, cucumbers, garlic, lentils, and onions." "What?" He asked. Would you exchange the better for the worse? If that's what you want, get down to a city, there you will find what you have asked for. Gradually, they became so degraded that shame and misery were brought upon them and they drew upon themselves the wrath of Allah; this was because they went on rejecting the commandments of Allah and killed His prophets unjustly, furthermore, it was the consequence of their disobedience and transgression.	की है	(उस वक़्त यह हिदायत कर दी गई थी कि) अल्लाह का दिया हुआ रिज्क खाओ-पियो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो	याद करो, जब तुमने कहा था कि "ऐ मूसा, हम एक ही तरह के खाने पर सब्र नहीं कर सकते	अपने रब से दुआ करो कि हमारे लिए ज़मीन की पैदावार, साग, तरकारी, गेहूँ, लहसुन, प्याज़, दाल वगैरह पैदा करे |" तो मूसा ने कहा, "क्या एक बेहतर चीज़ के बजाय तुम अदना दर्जे की चीज़ें लेना चाहते हो? अच्छा, किसी शहरी आबादी में जा रहो	जो कुछ तुम माँगते हो, वहाँ मिल जाएगा |" आख़िरकार नौबत यहाँ तक पहुँची कि ज़िल्लत व ख्वारी और पस्ती व बदहाली उनपर मुसल्लत हो गई और वे अल्लाह के ग़ज़ब में घिर गए	यह नतीजा था इसका कि वे अल्लाह की आयात से कुफ़्र करने लगे और पैगम्बरों को नाहक क़त्ल करने लगे	यह नतीजा था उनकी नाफ़रमानियों का और इस बात का कि वे हुदूदे-शरीअत से निकल-निकल जाते थे	
Tafsir	